

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये नरमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে নরমং দশকম্ ॥

জগৎসৃষ্টিপ্রকাররণনম্

স্থিতঃ স কমলোদ্ভরস্তর হি নাভিপঙ্কেরুহে
কুতস্বিদিদমম্বুধারুদিতমিত্যনালোকযন্।
তদীক্ষণকুতুহলাৎ প্রতিদিশং রিবৃত্তানন -
শচতুর্দনতামগাদ্বিকসদষ্টদৃষ্ট্যম্বুজাম্ ॥ 9.1 ॥

মহার্ণররিঘূর্ণিতং কমলমের তৎ কেৱলং
রিলোক্য তদুপাশ্রযং তর তনুং তু নালোকযন্।
ক এষ কমলোদরে মহতি নিস্সহাযো হ্যহং
কুতঃ স্বিদিদমম্বুজং সমজনীতি চিন্তামগাৎ ॥ 9.2 ॥

অমুষ্য হি সরোরুহঃ কিমপি কারণং সম্ভরে -
দিতি স্ম কৃতনিশ্চযস্স খলু নালরন্ধ্রাধ্রনা।
স্বযোগবলরিদ্যযা সমররুচরান্ প্রৌচধী -
স্তুদীযমতিমোহনং ন তু কলেবরং দৃষ্টরান্ ॥ 9.3 ॥

ততস্সকলনালিকারিরমার্গগো মার্গযন্
প্রযস্য শতরৎসরং কিমপি নৈর সন্দৃষ্টরান্।
নিবৃত্ত্য কমলোদরে সুখনিষণ্ণ একাগ্রধীঃ
সমাধিবলমাদধে ভরদনুগ্রহৈকাগ্রহী ॥ 9.4 ॥

শতেন পরিবৎসরৈর্দৃচসমাধিবন্ধোল্লসৎ -
প্রবোধরিশদীকৃতস্স খলু পদ্মিনীসম্ভরঃ।

अदृष्टचरमद्भुतं तर हि रूपमस्तुर्दृशा
र्यचष्ट परितुष्टधीर्भुजगभोगभागाश्रयम् ॥ 9.5 ॥

किरीटमकुटोल्लसत्कटकहारकेयूरयुग् -
मणिस्फुरितमेखलं सुपरिरीतपीताम्बरम्।
कलायकुसुमप्रभङ्गलतलोल्लसत्कौस्तुभङ्
रपुस्तदधि भारये कमलजन्मने दर्शितम् ॥ 9.6 ॥

श्रुतिप्रकरदर्शितप्रचुररैभर श्रीपते
हरे जय जय प्रभो पदमुपैषि दिष्ट्या दृशोः।
कुरुष्व धियमाशु मे भुरननिर्मितौ कर्मठा -
मिति द्रुहिणरर्णितस्त्रगुणवंहिमा पाहि माम् ॥ 9.7 ॥

लभस्व भुरनत्रयीरचनदम्भतामम्भतां
गृहाण मदनुग्रहं कुरु तपश्च भूयो रिधे।
भरत्रखिलसाधनी मयि च भक्तिरतुत्येकटे -
तुदीर्य गिरमादधा मुदितचेतसं रेधसम् ॥ 9.8 ॥

शतं कृततपास्ततस्स खलु दिव्यसंरत्सरा -
नराप्य च तपोबलं मतिबलं च पूर्वाधिकम्।
उदीक्ष्य किल कम्पितं पयसि पङ्कजं रायुना
भरद्वलरिजृम्भितः परनपाथसी पीतरान् ॥ 9.9 ॥

तरैर कृपया पुनस्सरसिजेन तेनैर सः
प्रकल्प्य भुरनत्रयीं प्ररवृते प्रजानिर्मितौ।
तथारिधकृपाभरो गुरुमरुत्पुराधीश्वर
त्रमाशु परिपाहि मां गुरुदयोस्मितैरीक्षितैः ॥ 9.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये नरमं दशकं समाप्तम् ॥